

कि सी भी शहर के विकास का वास्तविक आकलन उसके चमकते बाजारों और बड़े निर्माण कार्यों से नहीं, बल्कि आम नागरिक को मिलने वाली बुनियादी सुविधाओं से होता है। जिस मोहल्ले में सड़क टूटी हो, नालियां जाम हों, कचरा समय पर न उठे, स्ट्रीट लाइटों बंद पड़ी हों या पेयजल की समस्या बनी रहे, वहां विकास के बड़े दावे अंधूरे ही माने जाएंगे। स्थानीय समस्याओं का समाधान शासन-प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी है, लेकिन इसके लिए नागरिकों, समाजसेवियों और निर्विचित्र पार्षदों के बीच बेहतर तालमेल भी आवश्यक है।

वार्ड का पार्षद जनता द्वारा चुना गया प्रतिनिधि होता है। इसलिए उसके सामने अपने क्षेत्र की समस्याओं को संबंधित नगर निकाय और प्रशासन के समक्ष उठाने तथा समाधान के लिए निरंतर प्रयास करने की जिम्मेदारी रहती है। दूसरी ओर समाजसेवी ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं जो बिना किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के जनता की आवाज को संगठित रूप से सामने लाएं। यदि दोनों पक्ष अपनी-अपनी भूमिका को समझते हुए साथ काम करें तो स्थानीय समस्याओं के समाधान की प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो सकती है।अक्सर देखने में आता है कि किसी मोहल्ले की समस्या लंबे समय तक बनी रहती है, जबकि नागरिक कई बार शिकायत कर चुके होते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि शिकायत व्यक्तिगत स्तर पर रह जाती है और उसके समाधान के लिए निरंतर अनुवर्ती कार्रवाई नहीं हो पाती। ऐसे मामलों में समाजसेवी नागरिकों की समस्या को व्यवस्थित रूप से संबंधित पार्षद के सामने रख सकते हैं। समस्या की तस्वीरें,

संपादकीय

जनता की समस्या, पार्षद की जिम्मेदारी और समाजसेवी की भूमिका



स्थान, प्रभावित लोगों की संख्या और पूर्व में की गई शिकायतों की जानकारी उपलब्ध करारकर समाधान की प्रक्रिया को मजबूत बनाया जा सकता है। लेकिन समाजसेवा का अर्थ केवल शिकायतों की सूची बनाना नहीं होना चाहिए। समाजसेवी को समस्या के समाधान में सकारात्मक सहयोगी की भूमिका निभानी चाहिए। पार्षद से संपर्क करना, संबंधित विभाग तक मामला पहुंचाना और निर्धारित समय के बाद उसकी प्रगति की जानकारी लेना—ये प्रयास जनता के लिए उपयोगी साबित हो सकते हैं।इसी तरह पार्षदों को भी समाजसेवियों को राजनीतिक चरम से देखने के बजाय जनहित में उनके सहयोग

का स्वागत करना चाहिए। किसी समस्या को उठाने वाला व्यक्ति किसी राजनीतिक दल या विचारधारा से जुड़ा हो, यह जरूरी नहीं कि उसकी समस्या गलत हो। जनप्रतिनिधि का दायित्व अपने वार्ड के प्रत्येक नागरिक की समस्या को सुनना और उपलब्ध संवैधानिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था के माध्यम से उसके समाधान का प्रयास करना है। जनता की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। नागरिकों को केवल शिकायत करने के बजाय समाधान की प्रक्रिया में जिम्मेदार भागीदार बनना होगा। सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, स्वच्छता बनाए रखना, कचरा निर्धारित स्थान पर डालना और स्थानीय समस्याओं की सही सूचना देना नागरिक जिम्मेदारी का

नवरात्र स्थापना: शक्ति-आराधना, आस्था और भारतीय संस्कृति का महापर्व

भारतीय संस्कृति में पर्व केवल उत्सव नहीं होते, वे जीवन-दर्शन, आध्यात्मिक चेतना और सामाजिक एकता के वाहक भी होते हैं। इन्हीं पर्वों में नवरात्र का विशेष स्थान है। नवरात्र के प्रथम दिन होने वाली घटस्थापना या कलश स्थापना के साथ वातावरण में भक्ति, श्रद्धा और शक्ति-आराधना की अद्भुत अनुभूति दिखाई देने लगती है। मंदिरों से लेकर घरों तक देवी के जयकारे गूंजते हैं और श्रद्धालु मां भगवती के नौ स्वरूपों की आराधना के संकल्प के साथ आत्मशुद्धि और साधना के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं।

नवरात्र स्थापना के अवसर पर निधि-विधान से कलश स्थापित किया जाता है। कलश में जल भरकर उसके ऊपर आम या अशोक के पत्ते और नारियल रखा जाता है। पूजा स्थल पर मिट्टी में जौ बोने की भी परंपरा है। नवरात्र के दिनों में जौ का अंकुरित होना शुभ माना जाता है और इसे समृद्धि तथा जीवन-ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है।घटस्थापना का वास्तविक संदेश बाहरी अनुष्ठान से आगे बढ़कर भीतर की चेतना से जुड़ा है। कलश मानो यह स्मरण कराता है कि जिस प्रकार एक पात्र में जीवन का आधार संजोया जाता है, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने भीतर सद्भाव, संयम, करुणा और सकारात्मक ऊर्जा का संचय करना चाहिए। नवरात्र का आरंभ इसलिए आत्मचिंतन और आत्मस्वयं की



शुरुआत के रूप में भी देखा जा सकता है। नवरात्र के नौ दिनों में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कालायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। प्रत्येक स्वरूप का अपना धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। पहले दिन मां शैलपुत्री की आराधना होती है। वे प्रकृति और दृढ़ता का प्रतीक मानी जाती हैं। दूसरे दिन ब्रह्मचारिणी तप, संयम और साधना की प्रेरणा देती हैं। चंद्रघंटा शांति और साहस का संदेश देती हैं, जबकि मां कूष्मांडा को सृजनात्मक ऊर्जा से जोड़ा जाता है। स्कंदमाता मातुल्य का प्रतीक हैं। मां कालायनी शक्ति और पराक्रम की आराध्य हैं। कालरात्रि नकारात्मक शक्तियों के विनाश का प्रतीक मानी जाती हैं। महागौरी शुद्धता और शांति का संदेश देती हैं तथा सिद्धिदात्री को साधना की पूर्णता और सिद्धि से जोड़ा जाता है।इन नौ स्वरूपों की आराधना भारतीय दर्शन में नारी शक्ति के व्यापक स्वरूप की ओर संकेत करती है। यहां शक्ति केवल युद्ध और पराक्रम का प्रतीक नहीं, बल्कि सृजन, करुणा, ज्ञान, धैर्य, मातुल्य और आत्मबल का भी रूप

है। भारत की सांस्कृतिक विविधता नवरात्र के दौरान विशेष रूप से दिखाई देती है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों में इस पर्व की परंपराएं भिन्न हैं, लेकिन आस्था का मूल भाव एक है।एगुजरा,राजस्थान सहित कई राज्यों में गरबा और डांडिया के माध्यम से मां की आराधना की जाती है। पश्चिम बंगाल में दुर्गापूजा भव्य सांस्कृतिक आयोजन का रूप लेती है। हिमाचल प्रदेश में नवरात्र की अपनी विशिष्ट लोकपरंपराएँ हैं। उत्तर भारत में मंदिरों में विशेष पूजा, तंत्र और जागरण होते हैं। दक्षिण भारत में भी नवरात्र विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के साथ मनाए जाते हैं। आज की तेज गति वाली जीवनशैली में कुछ समय अपने भीतर झांकना, संयमित आहार लेना, प्रार्थना करना और नकारात्मक विचारों से दूरी बनाना मानसिक शांति की दिशा में भी सहायक हो सकता है। इस प्रकार नवरात्र का त्रय आध्यात्मिक अनुशासन के साथ जीवनशैली में संतुलन का संदेश भी देता है।आज तकनीकी प्रगति और आर्थिक विकास के साथ समाज अनेक नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। तनाव, असहिष्णुता, उपभोक्तावाद और सामाजिक दूरी जैसी समस्याओं के बीच नवरात्र का संदेश और अधिक प्रासंगिक दिखाई देता है। यह पर्व हमें सामूहिकता, अनुशासन, आस्था और आत्मचिंतन का अवसर देता है।

जीवन की सबसे बड़ी समस्या सूचनाओं की कमी नहीं, बल्कि अधूरी समझ है

मेरे परामर्श कक्ष (क्लीनिक) में जब लोग मानसिक तनाव, अवसाद, रिश्तों में बिखराव या जीवन के खालीपन की शिकायत लेकर आते हैं, तो एक बात अक्सर सामने आती है—हमारे जीवन की सबसे बड़ी समस्या सूचनाओं की कमी नहीं, बल्कि अधूरी समझ है। हम दुनिया भर की किताबें पढ़ लेते हैं, डिग्री हासिल कर लेते हैं, लेकिन फिर भी वही गलतियाँ दोहराते हैं और उन्हीं मानसिक व भावनात्मक चक्रव्यूहों में फँसे रहते हैं। अनेक महापुरुषों के गहन जीवन-दर्शन और मनोवैज्ञानिक सूत्रों पर चिंतन करते हुए कुछ ऐसे विचार सामने आए, जो मानसिक शांति और जीवन की दिशा बदलने के लिए बेहद जरूरी हैं। आइए, इन सभी महत्वपूर्ण सिद्धांतों को गहराई से समझें:

1. ज्ञान और बुद्धिमत्ता में अंतर (Knowledge vs. Wisdom) ज्ञान हमें बताता है कि क्या है, लेकिन बुद्धिमत्ता हमें सिखाती है कि उसका उपयोग कब, कहाँ और कैसे करना है। ज्ञान किताबों और सूचनाओं से मिल सकता है, लेकिन बुद्धिमत्ता अनुभवों, आत्म-मंथन

और गलतियों को स्वीकारने से पैदा होती है। एक समझदार व्यक्ति किसी भी बात पर तुरंत प्रतिक्रिया (React) नहीं देता; वह ठहरता है, स्थिति को गहराई से समझता है और फिर शांत मन से उत्तर (Respond) देता है। बुद्धिमत्ता का अर्थ हर बार सही साबित होना नहीं, बल्कि यह स्वीकार करने का साहस होना है कि आप कब गलत हैं। 2. आत्मज्ञान की शक्ति (The Power of Self-Awareness) हम पूरी ज़िंदगी दूसरों को समझने और उन पर दोष मढ़ने में बिता देते हैं कि "उसने मुझे गुस्सा दिलाया" या "परिस्थितियों ने मुझे दुखी किया।" लेकिन सच्चाई यह है कि बाहर की घटनाएँ केवल हमारे भीतर पहले से दबी हुई असुरक्षा या अशांति को छूती हैं। जब तक आप अपने डर, अपनी कमज़ोरियों और अपने दोहराए जाने वाले व्यवहारिक पैटर्न्स को नहीं पहचानते, तब तक बदलाव संभव नहीं है। आत्मज्ञान आपको एक लाचार "पीड़ित" (Victim) की मानसिकता से निकालकर अपने जीवन का "निर्माता" (Creator) बना देता है।

3. निर्णय लेने की कला (The Art of Decision-Making) हमारा वर्तमान और भविष्य हमारी किस्मत से नहीं, बल्कि हमारे लिए गए फैसलों से तय होता है। अक्सर हम तीन कारणों से गलत फैसले लेते हैं: अति-भावना, डर और तात्कालिक इच्छाएँ। जब भी कोई बड़ा फैसला लेना हो, तो यह तीन-चरणीय नियम अपनाएँ: रुकें, सोचें, फिर चुनें। हमेशा खुद से पूछें—“क्या यह फैसला मेरा डर ले रहा है या मेरी समझ?” और आज का यह चुनाव मुझे पाँच साल बाद कहीं खड़ा करेगा? परिपक्वता का मतलब यह भी समझना है कि जब आप किसी एक चीज को 'हाँ' कहते हैं, तो उसी समय आप किसी अन्य चीज को 'ना' कह रहे होते हैं। 4. धैर्य और आत्म-संयम (Patience and Emotional Control)आज की भागदौड़ भरी दुनिया में हर चीज तुरंत चाहिए, लेकिन व्यक्तिव, रिश्ते और मानसिक शांति कभी रातों-रात विकसित नहीं होते। धैर्य का अर्थ हाथ पर हाथ रखकर बैठना या कमज़ोरी नहीं है; बल्कि सही दिशा में काम करते हुए विपरीत परिस्थितियों में भी भीतर से न टूटना है। जब कोई आपको

उकसाए और आप शांत रहें, तो यह आपकी आंतरिक शक्ति और आत्म-नियंत्रण का परिचायक है। केवल दस सेकंड का ठहराव आपको कई बड़े पछतावों से बचा सकता है। 5. संबंधों में बुद्धिमत्ता (Wisdom in Relationships) सच्ची बुद्धिमत्ता एकांत में नहीं, बल्कि रिश्तों के बीच परखी जाती है। रिश्तों में सबसे बड़ी गलती होती है 'सही साबित होने की ज़िद'। बहस जीतकर अक्सर लोग रिश्ते हार जाते हैं। सहानुभूतिपूर्वक सुनना (Empathetic Listening): सामने वाले के केवल शब्दों को नहीं, बल्कि उसके पीछे के अनकहे दर्द और भावना को समझें। दूसरों को उनकी सीमाओं के साथ स्वीकार करें और उन्हें माफ़ करना सीखें। क्षमा दूसरों पर एहसान नहीं, बल्कि अपने मानसिक सुकून के लिए की जाती है। 6. असफलता से सीखना (Reframing Failure)अगर आप गिरने से डरते हैं, तो आप कभी अपने सामर्थ्य (Potential) को पहचान नहीं पाएंगे। हर असफलता अपने साथ दो चीज़ें लाती है: दर्द (जो हमारे अहंकार को तोड़ता है) और दिशा (जो

बताती है कि कौन-सा रास्ता सही नहीं था)। असफलता को शत्रु मानने के बजाय शिक्षक समझें। जो व्यक्ति सुरक्षित खेलता है, वह सामान्य बनकर रह जाता है। गिरना स्वाभाविक है, लेकिन गिरकर न उठना ही असली हार है। 7. आंतरिक शांति (Inner Peace) मानसिक शांति कोई बाहरी वस्तु या भविष्य का लक्ष्य नहीं है जिसे सब कुछ ठीक होने के बाद हासिल किया जाएगा। यह आपके भीतर मौजूद एक स्थिति है। मन समुद्र की सतह जैसा है—ऊपर विचार और भावना रूपी लहरें उठती-गिरती रहेंगी, लेकिन समुद्र की गहराई में हमेशा सन्नद्धता और स्थिरता होती है। याद रखिए: आप अपने विचार नहीं हैं, आप उन विचारों को देखने वाले दृष्टा हैं। दैनिक जीवन में कृतज्ञता (Gratitude) का अभ्यास करें, इससे जीवन में जो नहीं है उसका शोर धीमा हो जाता है।

साभार:

डॉ. अनिल तांबी की फेसबुक वॉल से



विकसित भारत की राह में जर्जर शिक्षा व्यवस्था सबसे बड़ा सवाल

भारत आज वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है। एक शिक्षक, टूटती दीवारें और घटते सरकारी स्कूल-क्या शिक्षा के बिना 2047 का सपना पूरा होगा? दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में देश की प्रगति, डिजिटल क्रांति, अंतरिक्ष उपलब्धियाँ, आधारभूत ढांचे का विस्तार और वैश्विक मंच पर बढ़ता प्रभाव निश्चित रूप से गौरव का विषय हैं। लेकिन इसी चमकदार तस्वीर के पीछे यदि हम सरकारी स्कूलों की ओर देखें तो एक दूसरा भारत दिखाई देता है—ऐसा भारत जहां हजारों बच्चे आज भी पर्याप्त शिक्षकों, सुस्थित भवन, स्वच्छ पेयजल, शौचालय, बिजली और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के लिए संघर्ष कर रहे हैं। सवाल यह है कि जिस शिक्षा-व्यवस्था पर विकसित भारत की नींव रखी जानी है, उसकी बुनियाद ही कमजोर होगी तो 2047 का भारत पहुंचाया जा सकता है।जनता की आवाज को मजबूत करना ही सच्ची समाजसेवा है और उस आवाज को समाधान तक पहुंचाना जनप्रतिनिधित्व की सार्थकता।



आज का निर्णय, कल का भारत

रिसर्ची छतों और सुरक्षित पेयजल जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिए प्रदर्शन किया। यह स्थिति केवल किसी एक राज्य अथवा किसी एक सरकार की विफलता नहीं है। यह वर्षों से चली आ रही उस प्रशासनिक सोच का परिणाम है जिसमें शिक्षा को प्राथमिकता तो भाषणों में दी गई, लेकिन उसकी गुणवत्ता और जवाबदेही को शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में स्थान नहीं मिला। शिक्षा विभागों में अधिकारियों और कर्मचारियों की बड़ी व्यवस्था है, बजट है, योजनाएँ हैं, समितियाँ हैं, निरीक्षण तंत्र है—फिर भी एक शिक्षक वाले एक लाख से अधिक स्कूल कैसे बने रहे? यह सवाल केवल सरकार से नहीं, पूरे प्रशासनिक तंत्र से पूछा जाना चाहिए।

निश्चित रूप से तस्वीर पूरी तरह निराशाजनक भी नहीं है। यूडीआईएसई प्लस के अनुसार 2024-25 में देश में कुल 14.71 लाख स्कूल, करीब 24.69 करोड़ विद्यार्थी और एक करोड़ से अधिक शिक्षक हैं। सरकारी स्कूलों की संख्या 10.13 लाख है, जबकि निजी मान्यता प्राप्त स्कूल करीब 3.40 लाख हैं। सरकार के आंकड़े यह भी बताते हैं कि एकल-शिक्षक स्कूलों की संख्या 2023-24 के 1,10,971 से घटकर 2024-25 में 1,04,125 हुई है और कंप्यूटर सुविधा वाले स्कूलों का अनुपात 57.2 प्रतिशत से बढ़कर 64.7 प्रतिशत हुआ है। इन सुधारों को स्वीकार करना चाहिए, लेकिन इन्हें अंतिम उपलब्धि मान लेना आत्मसंतोष होगा। क्योंकि शिक्षा की असली कसौटी भवन, कंप्यूटर या आंकड़े नहीं, बच्चे की सीखने की क्षमता और उसके भविष्य का निर्माण है।

नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट एक और महत्वपूर्ण तस्वीर सामने रखती है। 2014-15 में देश में 11.07 लाख सरकारी स्कूल थे, जो 2024-25 में घटकर 10.13 लाख रह गए। इसी के समानांतर उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तस्वीर भी चिंता पैदा करती है। पेपर लीक, परीक्षा में अनियमितता, भर्ती में देरी और युवाओं के आंदोलनों की खबरें लगातार सामने आती रही हैं। 2026 में परीक्षा संबंधी विवादों ने विद्यार्थियों और अभ्यर्थियों में असंतोष को व्यापक बनाया। इसका अर्थ यह है कि समस्या शिक्षा-व्यवस्था के निचले स्तर से लेकर उच्च स्तर तक फैली हुई है।

इसके विपरीत निजी मान्यता प्राप्त स्कूलों की संख्या 2.88 लाख से बढ़कर 3.39 लाख हो गई। यह परिवर्तन केवल स्कूलों की संख्या का उतार-चढ़ाव नहीं है, यह अभिभावकों की बदलती पसंद और सरकारी शिक्षा में घटते विश्वास का संकेत भी है। सरकारी शिक्षक हैं, वेतन देने की क्षमता है और विशाल प्रशासनिक तंत्र है, तब सरकारी स्कूल निजी स्कूलों से पीछे क्यों हैं? निजी स्कूलों की आलोचना करना आसान है, लेकिन यह भी देखना होगा कि अभिभावक अपनी सीमित आय में फीस देकर भी निजी स्कूल क्यों चुन रहे हैं। इसका उत्तर सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता, अनुशासन, नियमितता, अंग्रेजी एवं तकनीकी शिक्षा, अभिभावक संवाद और सोशल के वातावरण में छिपा है। एसीआईआर के आंकड़े भी इस अंतर को रेखांकित करते हैं। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 2024 में कक्षा 3 के बच्चों में कक्षा 2 स्तर का पाठ पढ़ पाने वालों का अनुपात सरकारी स्कूलों में 23.4 प्रतिशत था, जबकि निजी स्कूलों में 35.5 प्रतिशत। कक्षा 5 में भी सरकारी स्कूलों का आंकड़ा 44.8 प्रतिशत और निजी स्कूलों का 59.3 प्रतिशत रहा। यानी समस्या केवल स्कूल भवन की नहीं, सीखने के परिणामों की भी है।

इसी के समानांतर उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तस्वीर भी चिंता पैदा करती है। पेपर लीक, परीक्षा में अनियमितता, भर्ती में देरी और युवाओं के आंदोलनों की खबरें लगातार सामने आती रही हैं। 2026 में परीक्षा संबंधी विवादों ने विद्यार्थियों और अभ्यर्थियों में असंतोष को व्यापक बनाया। इसका अर्थ यह है कि समस्या शिक्षा-व्यवस्था के निचले स्तर से लेकर उच्च स्तर तक फैली हुई है।

डायबिटिज, थायरॉइड, बौनापन एवं अन्य एन्डोक्राइन बीमारियों के लिए प्रतिदिन क्लिनिक

डॉ. अंकित मंगलूनिया

MD (Gold Medalist) DM (एन्डोक्राइनोलॉजिस्ट)

समय - प्रातः 9 बजे से 2 बजे सायं 7 बजे से 8 बजे

सेक्टर - 10, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

+91-0141-2785075, 8875002436, sakethospitaljaipur@gmail.com

www.sakethospital.in

विशेषज्ञ

डॉ. अंकित मंगलूनिया

MD (Gold Medalist) DM (एन्डोक्राइनोलॉजिस्ट)

समय - प्रातः 9 बजे से 2 बजे सायं 7 बजे से 8 बजे

सेक्टर - 10, मीरा मार्ग, मानसरोवर, जयपुर

+91-0141-2785075, 8875002436, sakethospitaljaipur@gmail.com

www.sakethospital.in

कायस्थ टुडे में प्रकाशित आलेख में लेखक के विचार हैं। सम्पादक का इससे सरोकार नहीं है। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर होगा।

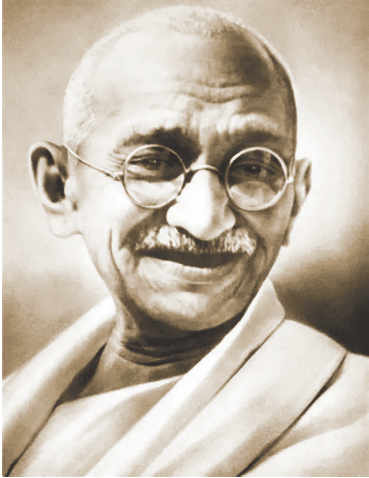
सम्पादक

गांधी जयंती: सत्य... अहिंसा और मानवीय मूल्यों की शाश्वत प्रासंगिकता

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में महात्मा गांधी जी का व्यक्तित्व केवल एक राजनीतिक नेता के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे विचारक और जननायक के रूप में स्थापित है, जिन्होंने सत्य, अहिंसा, आत्मबल और नैतिकता को सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन का माध्यम बनाया। गांधी जयंती हमें उनके जीवन, संघर्ष और विचारों को स्मरण करने का अवसर देती है। यह दिन केवल एक महान व्यक्तित्व की जयंती मनाने का अवसर नहीं, बल्कि उन मूल्यों पर पुनर्विचार करने का अवसर भी है, जिनकी आवश्यकता आज के समाज में उतनी ही है जितनी स्वतंत्रता संघर्ष के दौर में थी।

महात्मा गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उनका जीवन सामान्य पारिवारिक परिवेश से आरंभ होकर विश्व इतिहास के एक असाधारण अध्याय तक पहुँचा। इंग्लैंड में कानून की शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे दक्षिण अफ्रीका गए, जहाँ भारतीयों के साथ होने वाले भेदभाव ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। वहीं उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसक प्रतिरोध के प्रयोग किए। भारत लौटने के बाद उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनभागीदारी से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गांधीजी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने स्वतंत्रता को केवल विश्वी शासन से मुक्ति के रूप में नहीं देखा। उनके लिए स्वराज का अर्थ व्यक्ति, समाज और राष्ट्र—तीनों के नैतिक उत्थान से था। वे चाहते थे कि भारत ऐसा समाज बने जिसमें कमजोर व्यक्ति भी सम्मान के साथ जीवन जी सके, सामाजिक भेदभाव कम हो और आर्थिक विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। उनके राजनीतिक दर्शन का केंद्र सत्य और अहिंसा था। गांधीजी का विश्वास था कि अन्याय का विरोध आवश्यक है, लेकिन उसके लिए हिंसा को अनिवार्य माध्यम मानना उचित नहीं। सत्याग्रह का अर्थ उनके लिए केवल विरोध करना नहीं, बल्कि सत्य के प्रति दृढ़ रहना और अन्याय



के विरुद्ध नैतिक शक्ति का प्रयोग करना था। असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों में उनकी भूमिका ने स्वतंत्रता संघर्ष को व्यापक जनआंदोलन का रूप देने में योगदान दिया।

गांधीजी के विचारों का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक समरसता था। वे छुआछूत और सामाजिक भेदभाव के विरोधी थे तथा समाज के वंचित वर्गों के सम्मान और अधिकारों के लिए लगातार आवाज उठाते रहे। उनका मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सार्थक होगी जब समाज के भीतर मौजूद असमानताओं और भेदभाव को भी चुनौती दी जाएगी। आज जब सामाजिक समरसता, समान अवसर और गरिमा जैसे प्रशन सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा हैं, तब गांधीजी के इस पक्ष को नए संदर्भों में समझना आवश्यक है। गांधीजी का आर्थिक चिंतन भी उल्लेखनीय था। वे अत्यधिक उपभोग के बजाय संयम, श्रम की प्रतिष्ठा और स्थानीय अर्थव्यवस्था को महत्व देते थे। चरखा और खादी उनके लिए केवल वस्त्र या रोजगार के साधन नहीं थे; वे आत्मनिर्भरता और श्रम-सम्मान के प्रतीक थे। आज आत्मनिर्भरता, स्थानीय उत्पादन, टिकाऊ विकास और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर चर्चा हो रही है। ऐसे समय में गांधीजी के

सीमित उपभोग और संसाधनों के विवेकपूर्ण संदर्भ में पढ़ा जा सकता है।

गांधीजी का ग्राम स्वराज का विचार भी उनकी व्यापक दृष्टि का हिस्सा था। वे ऐसे भारत की कल्पना करते थे जिसमें गाँव आत्मनिर्भर, सहभागी और स्थानीय स्तर पर निर्णय लेने में सक्षम हों। आज पंचायती राज, विकेंद्रीकरण और स्थानीय शासन की चर्चा के बीच गांधीजी की यह अवधारणा ऐतिहासिक संदर्भ के साथ-साथ विचार-विमर्श का विषय बनी हुई है। गांधीजी की प्रासंगिकता राजनीति तक सीमित नहीं है। आज का समाज डिजिटल संचार, जीव आर्थिक परिवर्तन और बढ़ती प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहा है। सूचना के प्रसार ने संवाद को आसान बनाया है, लेकिन साथ ही गलत सूचना, धृष्टपूर्ण भाषा और सामाजिक ध्रुवीकरण जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। ऐसे वातावरण में सत्य के प्रति प्रतिबद्धता, असहमति का सम्मान और संवाद की संस्कृति महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्य बन जाते हैं।

पर्यावरण के संदर्भ में भी गांधीजी के विचारों पर चर्चा होती है। उनका जीवन सादगी, संयम और आवश्यकता के अनुरूप उपभोग पर आधारित था। आज जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव और बढ़ते उपभोक्तावाद के बीच यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि विकास और प्रकृति के बीच सत्य, संतुलन कैसे बनाया जाए। गांधीजी का जीवन इस प्रश्न पर विचार करने के लिए एक नैतिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, भले ही आज की पर्यावरणीय चुनौतियाँ उनके समय से कहीं अधिक जटिल हों। गांधीजी के विचारों का प्रभाव भारत की सीमाओं से बाहर भी दिखाई देता है। विश्व के विभिन्न हिस्सों में नागरिक अधिकारों और सामाजिक न्याय के आंदोलनों से जुड़े नेताओं ने अहिंसक प्रतिरोध की गांधीवादी परंपरा से प्रेरणा ली। इससे स्पष्ट होता है कि सत्याग्रह और अहिंसा का विमर्श भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से आगे बढ़कर वैश्विक राजनीतिक और सामाजिक चिंतन का हिस्सा बना।

हालाँकि गांधीजी के विचारों को आज के संदर्भ में समझते समय उन्हें केवल प्रतीकों तक सीमित करना पर्याप्त नहीं है। गांधी जयंती पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण और स्वच्छता अभियान महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक गतिविधियाँ हो सकती हैं, लेकिन गांधीजी की विरासत का वास्तविक अर्थ उनके मूल्यों को व्यवहार में उतारने के प्रयासों में है। सत्य के प्रति ईमानदारी, सार्वजनिक जीवन में नैतिकता, विरोधी विचारों के प्रति सम्मान, कमजोर व्यक्ति के प्रति संवेदनशीलता और हिंसा के बजाय संवाद को प्राथमिकता देना—ये ऐसे मूल्य हैं जिन्हें किसी भी लोकतांत्रिक समाज में लगातार मजबूत करने की आवश्यकता रहती है। गांधी जयंती हमें यह प्रश्न पूछने का अवसर देती है कि स्वतंत्रता के बाद हमने गांधीजी की विरासत से क्या ग्रहण किया और किन मूल्यों को अपने सार्वजनिक तथा निजी जीवन में पर्याप्त स्थान नहीं दे पाए। राष्ट्र निर्माण केवल सरकारों या संस्थाओं का कार्य नहीं है; नागरिकों के आचरण और सामाजिक जिम्मेदारी की भी उसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

महात्मा गांधी का जीवन हमें यह संदेश देता है कि बड़े परिवर्तन केवल शक्ति के प्रदर्शन से नहीं, बल्कि विचार, नैतिक साहस और जनभागीदारी से भी संभव हैं। उनकी विरासत को श्रद्धांजलि देने का सबसे सार्थक तरीका यही है कि हम सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा जैसे मूल्यों पर गंभीरता से विचार करें और उन्हें अपने जीवन में स्थान देने का प्रयास करें। इस दृष्टि से गांधी जयंती केवल अतीत को याद करने का दिन नहीं है। यह वर्तमान को परखने और भविष्य के लिए बेहतर सामाजिक दिशा तलाशने का अवसर भी है। गांधीजी इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय हैं, लेकिन उनके विचारों से उठने वाले प्रश्न आज भी हमारे सामने हैं। शायद यही किसी विचार और व्यक्तित्व की सबसे बड़ी जीवंतता है—समय बदलता रहे, लेकिन उसके मूल प्रश्न हमें लगातार सोचने के लिए प्रेरित करते रहें।

श्राद्ध : परम्परा से विज्ञान तक—स्मृति, मनोविज्ञान और सामाजिक स्वास्थ्य...

भारतीय संस्कृति में श्राद्ध पक्ष केवल दिवंगत पूर्वजों को स्मरण करने की परम्परा नहीं, बल्कि कृतज्ञता, पारिवारिक जुड़ाव और सामाजिक उत्तरदायित्व का अवसर है। 'श्राद्ध' शब्द ही श्रद्धा से बना है। इसका मूल भाव है—उन पूर्वजों के प्रति सम्मान और आभार, जिनके जीवन, संस्कार और अनुभवों से हमारी पीढ़ी निर्मित हुई है। परम्परा में श्राद्ध के दौरान तर्पण, पिंडदान, सात्त्विक भोजन, दान और जरूरतमंदों को भोजन कराने की प्रथा रही है। इन कर्मों को धार्मिक आस्था के संदर्भ में समझा जाता है। किंतु इनके सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को आधुनिक दृष्टि से भी देखा जा सकता है।

वैज्ञानिक दृष्टि से इसका सबसे ठोस पक्ष मनोविज्ञान से जुड़ा है। किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी स्मृतियों को स्वस्थ तरीके से स्वीकार करना शोक-प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा है। परिवार के लोग जब एक साथ बैठकर जुड़ाव को याद करते हैं, उनके जीवन की घटनाएँ सुनाते हैं और उनके गुणों की चर्चा करते हैं, तो व्यक्ति को अपने दुःख को व्यक्त करने तथा भावनात्मक सहारा पाने का अवसर मिलता है। सामूहिक स्मरण अकेलेपन की अनुभूति को कम कर सकता है और परिवार के सदस्यों के बीच भावनात्मक संबंध मजबूत कर सकता है।

इसका एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक संबंध स्मृति और

पारिवारिक पहचान से भी है। मनुष्य की आत्म-पहचान केवल उसके व्यक्तिगत अनुभवों से नहीं बनती; परिवार और पूर्व पीढ़ियों की कहानियाँ भी उसमें योगदान करती हैं। बच्चों को अपने दादा-दादी, परदादा-परदादी और परिवार के संघर्षों की जानकारी मिलने से उनमें पारिवारिक निरंतरता और कृतज्ञता की भावना विकसित हो सकती है। इस दृष्टि से श्राद्ध एक प्रकार का intergenerational memory—पीढ़ियों के बीच स्मृति-संरक्षण—का अवसर बन सकता है।

श्राद्ध की सामूहिकता का सामाजिक स्वास्थ्य से भी संबंध है। साथ बैठकर भोजन करना, जरूरतमंदों की सहायता करना और रिश्तेदारों से मिलना सामाजिक संपर्क को बढ़ाता है। आधुनिक शोध सामाजिक जुड़ाव को मानसिक स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता से जोड़ता है। इसलिए यदि श्राद्ध के अवसर पर दिखावे और अत्यधिक खर्च के बजाय भोजन, शिक्षा-सहायता, वस्त्रदान अथवा किसी जरूरतमंद की वास्तविक मदद की जाए तो धार्मिक परम्परा सामाजिक कल्याण में बदल सकती है।

भोजन संबंधी परम्पराओं का वैज्ञानिक पक्ष भी सावधानी से समझना चाहिए। श्राद्ध के दिनों में सात्विक, अपेक्षाकृत हल्का और घर का बना भोजन करने की परम्परा रही है। यदि इसमें संतुलित आहार, स्वच्छता और नियंत्रित मात्रा को महत्व दिया जाए तो यह सामान्य स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है।

लेकिन किसी विशेष श्राद्ध-भोजन को अपने-आप में रोगनिवारक या वैज्ञानिक रूप से अनिवार्य बताना उचित नहीं होगा। इसी प्रकार तर्पण और पिंडदान को मृत व्यक्ति तक जल या भोजन के भौतिक रूप से पहुँचाने की वैज्ञानिक प्रक्रिया मानने का प्रमाण आधुनिक विज्ञान में उपलब्ध नहीं है। इनका महत्व मुख्यतः आस्था, प्रतीकात्मकता, स्मृति और सांस्कृतिक निरंतरता में है।

इसलिए श्राद्ध की वैज्ञानिक व्याख्या उसकी धार्मिक आस्था को नकारना नहीं, बल्कि उसके मानवीय और सामाजिक आयामों को समझना है। पूर्वजों को सच्ची श्रद्धांजलि केवल कर्मकांड से नहीं, उनके अच्छे संस्कारों को अपने जीवन में उतारने, परिवार को जोड़ने और समाज के कमजोर व्यक्ति के जीवन में सहयोग का हाथ बढ़ाने से भी मिलती है। श्राद्ध अतीत को केवल याद करने की परम्परा नहीं—अतीत से मिले मूल्यों को वर्तमान के व्यवहार में जीवित रखने का संस्कार है।



डॉ. जितेन्द्र प्रसाद माथुर, अग्रवाल फार्म जयपुर

शहीद स्मृति वंदन कार्यक्रम 7 अक्टूबर को

कायस्थ टुडे
जयपुर। शहीद मेजर आलोक माथुर मेमोरियल समिति द्वारा शहीद मेजर आलोक माथुर की 23 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर अमर जवान ज्योति जनपद पर शाम 5:30 से 8:30 तक 7 अक्टूबर को कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। समिति के अध्यक्ष

जयपाल सिंह मंडोता एवं सचिव मुकेश दत्त माथुर ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इस अवसर पर शहीद परिवारजनों का सम्मान, पुष्पांजलि के साथ देश भक्ति गीत संध्या का आयोजन किया जायेगा। समिति की इवेंट कोऑर्डिनेटर शिप्रा माथुर ने बताया कि 10वी व 12वी कक्षा में वर्ष

2026 में समाज के 80 प्रतिशत अंक से अधिक प्राप्त विद्यार्थियों के साथ विभिन्न अकादमी परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मान भी किया जाएगा। इस दायरे में आने वाले विद्यार्थी शहीद मेजर आलोक माथुर मेमोरियल समिति से सम्पर्क करें।



महिला सशक्तीकरण की ओर एक मजबूत कदम

कायस्थ टुडे
जयपुर। शिल्पायन संस्था की संस्थापक लक्ष्मी अशोक ने राजस्थान महिला आयोग एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीमा हिंगोनिया से एक बेहद आत्मीय मुलाकात पटना का पहनाकर और मोतियों की माला पहना कर स्वागत किया।

लक्ष्मी अशोक ने मुलाकात के दौरान महिलाओं की पीड़ा, उनकी रोजमर्रा की परेशानियों और उनके त्वरित व व्यावहारिक समस्या समाधान पर अत्यंत संवेदनशील

चर्चा की। शिल्पायन संस्था की ओर से जयपुर में महिला सुरक्षा की पहल और महिलाओं को सुरक्षित माहौल और तुरंत सहायता प्रदान करने के लिए शिल्पायन संस्था द्वारा जयपुर शहर में सांगानेर पुलिस थाना परिसर में और महिला पुलिस थाना परिसर (वरुण पथ, मानसरोवर) में महिला सुरक्षा एवं सलाह केंद्र सफलतापूर्वक संचालित किए जा रहे हैं। सीमा हिंगोनिया ने पीड़ितों को न्याय और संबल दिलाना को और अधिक सुलभ करने का आश्वासन दिया।

पैकेज में उसके बूढ़े माँ-बाप के लिए साल में कितने दिन हैं?

कल शाम को मैं पुष्पांजलि मेडिकल स्टोर पर खड़ा था। मेरी दवाइयाँ निकल रही थीं और बगल में खड़े दो लोग आपस में बात कर रहे थे। एक सज्जन बहुत उत्साह से मेडिकल स्टोर वाले नीरज को बता रहे थे—“बेटे का एडमिशन बैंगलोर के बहुत बड़े कॉलेज में हुआ है।” नीरज ने पूछा, “अच्छा! वहाँ प्लेसमेंट अच्छा है?” चेहरे पर गर्व और आवाज में खुशी अचानक और बढ़ गई। “अरे बहुत बढ़िया... 50-60 लाख तो आराम से। अच्छे बच्चे को 70 लाख तक का पैकेज मिल जाता है। वहाँ से निकलने के बाद जिंदगी बन जाती है।”

मैं चुपचाप सुनता रहा। उनकी खुशी बिल्कुल जायज थी। किस माता-पिता को खुशी नहीं होगी कि उनका बेटा इतने बड़े कॉलेज में पढ़ेगा, अच्छी नौकरी पाएगा और जिंदगी में बहुत आगे जाएगा? लेकिन उसी क्षण मेरे मन में एक अजीब-सा दर्द उठा। मैं सोचने लगा—जिस पैकेज की चर्चा आज ये पिता इतने गर्व से कर रहे हैं, क्या इन्हें पता है कि कभी-कभी वही पैकेज उनके बेटे को उनसे किन्नी दूर ले जाता है?

कॉलेज बैंगलोर ले जाएँगा, नौकरी शायद मुंबई ले जाएँगी, कंपनी अमेरिका भेज देगी, फिर वहीं रहने लगेगा, शुरुवात में साल में एक बार होली दिवाली आयेगा जायेगा, फिर शादी होगी, फिर बच्चे होंगे, फिर आना जाना तीन चार सालों में एक बार शायद होगा, फिर उसकी अपनी दुनिया होगी। और एक दिन... वही बेटा जिसके एडमिशन का खबर सुनाकर आज पिता हर किसी को मिटाईं बॉट रहे हैं, शायद साल पांच साल में एक बार घर आएगा। और माता-पिता? वे वहीं रह जाएँगी, अपने उसी घर में, जिसे उन्होंने बेटे-बेटी के लिए बनाया था।

मुझे यह बात इसलिए ज्यादा चुभती है क्योंकि मैंने इसे अपनी आँखों के सामने होते देखा है।

मेरे दूर के फूफा जी अलीगढ़ यूनिवर्सिटी

में प्रोफेसर थे, बहुत बड़ा घर है उनका, करीब 200 वर्ग गज में बना हुआ। सम्मान था, अच्छी नौकरी थी। यूनिवर्सिटी के बच्चों और स्टाफ में उनकी बहुत लोकप्रियता थी। जीवन में किसी चीज की कोई बड़ी कमी नहीं थी। दो बच्चे थे, एक बेटा मुदुल और एक बेटी अलका। दोनों को उन्होंने बहुत अच्छी शिक्षा दी। अलका उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गईं। वहीं उसकी किसी से दोस्ती हुई और दोनों ने विवाह का फैसला किया। शादी जरूर अलीगढ़ से हुई। लेकिन शादी के बाद दोनों वापस अमेरिका चले गए। मुदुल ने बोटिंग किया, उसकी भी नौकरी लगी। उसने भी अपनी पसंद से शादी की। दिल्ली में रिसेशन हुआ। और फिर वह भी अमेरिका में बस गया। दोनों बच्चे सफल थे, बहुत सफल। माता-पिता के सपने पूरे हो गए थे। लेकिन शायद एक सपना कहीं पीछे छूट गया था—बच्चों के साथ रहने का सपना। जब तक फूफा जी नौकरी में थे, बुआ के पास समय काटने के रास्ते थे। कभी किसी रिश्तेदार के यहाँ चली गईं। कभी किसी से मिलने। कभी किसी काम में लग गईं। फूफा जी यूनिवर्सिटी चले जाते थे। शाम को लौटते तो घर में कोई था। फिर 2018 में फूफा जी रिटायर हो गए। दोनों पहली बार सचमुच एक साथ बहुत सारा समय बिताने लगे। उन्होंने सोचा था—अब जिंदगी अपनी है। अब खूब यूरेगे। सभी ज्योतिर्लिंग देखेंगे, घर धाम जाएँगे, कभी हरिद्वार, कभी ऋषिकेश, कभी दक्षिण भारत। बच्चों के पास अमेरिका भी चले जाएँगे। बुढ़ापे का समय अपने-अपने से कटेगा। लेकिन जिंदगी ने कुछ और ही लिखा था। बच्चे अमेरिका में थे। अपनी नौकरी थी। अपनी जिम्मेदारियाँ थीं। अपना घर था। अपनी दुनिया थी। अब अमेरिका में रहने के बाद भारत कौन लौटना चाहता है।

शुरुआत में वे आते-जाते रहे। फोन करते रहे। फिर धीरे-धीरे फोन कम हुए आना-जाना कम हुआ। यह किसी की गलती नहीं थी। बच्चों की भी अपनी जिंदगी थी। और माता-पिता की



अपनी उम्र। फिर बुआ की तबीयत खराब रहने लगी। घर का काम मुश्किल होने लगा। फूफा जी खुद भी उम्र के उस पड़ाव पर पहुँच चुके थे जहाँ बच्चे घर से सामान लाना, खाना बनाना, सफाई करना, डॉक्टर के चक्कर लगाना—सब धीरे-धीरे भारी होने लगता है। उन्होंने मेड रख ली। खाना बनाने वाली भी रख ली। सोचा था अब आसानी होगी।

लेकिन तभी कोरोना आ गया। और फिर जो हुआ, वह किसी बुरे सपने से कम नहीं था। बुआ को कोरोना हुआ। शुरूआत में पता नहीं चला। जब पता चला तब तक बीमारी बहुत बढ़ चुकी थी। वह समय ऐसा था कि अच्छे-बहुत लोग अपने घरवालों के लिए कुछ नहीं कर पा रहे थे। अस्पतालों के बाहर भीड़ थी। लोग डर रहे थे। हर तरफ मौत का सन्नाटा था। फूफा जी उम्रदराज थे। वे अकेले क्या-क्या कर पाते? और शायद जिस महिला से घर में मदद मिल रही थी, उसी के माध्यम से संक्रमण घर तक आया था। वह महिला भी नहीं बची। उसकी बस्ती में भी कई लोग चले गए थे। बुआ को अस्पताल ले जाने वाला तक कोई नहीं था। बेटा अमेरिका में था। फोन पर हाल पूछ रहा था। मदद करना चाहता होगा। लेकिन हजारों किलोमीटर की दूरी कभी-कभी इंसान की इच्छा से बड़ी हो जाती है।

और फिर... बुआ कहीं गईं। उस दिन शायद उस बड़े से घर की सबसे बड़ी चीज भी

चली गई—उसमें रहने वाली आवाज। 200 वर्ग गज का घर। कई कमरे। बड़ा आँगन। सामान से भरी अलमारियाँ। दीवारों पर तस्वीरें। सब कुछ था। बस बुआ नहीं थीं। और फूफा जी अकेले रह गए। पहले कुछ महीने हमारे साथ रहे। फिर कभी-कभी अपने घर चले जाते। खाना पहुँच करवा देते थे। जरूरत का सामान हल करवा देते थे। लेकिन एक चीज कोई नहीं पहुँचा पाया—साथ। कभी जिस कमरे में जाते, वहाँ बुआ होती थीं। कभी बेटा किसी कमरे में बैठा होता था। कभी बेटी दूसरे कमरे में। कभी बाहर वाले कमरे में फूफा जी। घर में आवाजें होती थीं। हँसी होती थी। कभी बहस होती थी। कभी बच्चों की बातें। कभी रसोई से बर्तनों की आवाज। अब वही घर था। लेकिन जिस कमरे में जाते... वहाँ कोई नहीं था। वे एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते। फिर वापस आते। कभी बरामदे में बैठते-बैठते पढ़ते। फिर दूसरे कमरे में चले जाते। ऐसा लगता था जैसे वे घर में रह नहीं रहे... घर में किसी को खोज रहे हों। बाद में उन्होंने फिर यूनिवर्सिटी के बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। रिटायर हो चुके थे फिर भी पढ़ाने लगे।

क्यों? शायद इसलिए नहीं कि उन्हें पैसे चाहिए थे। शायद इसलिए कि कुछ घंटे घर से बाहर निकलेंगे। फिर यूनिवर्सिटी के बाहर जाने वाले छात्रों के दूर में भी जाने लगे।

जहाँ छात्र जाते, वे साथ चले जाते। कभी-कभी मुझे लगता है—वह घूमने नहीं जाते थे। वह घर से भागने जाते थे। उस घर से... जिसे उन्होंने जिंदगी भर की कमाई से बनाया था। जिसकी EMI भरी थी। जिसमें उन्होंने सोचा था कि एक दिन बेटा बहू के साथ रहेगा। बेटी आएगी। नाती-पोते दौड़ेंगे। शाम को चाय बनेगी। घर में फिर से बच्चों की आवाज होगी। लेकिन जिंदगी ने उस घर को कुछ और ही बना दिया। एक बहुत बड़ा घर... और उसमें एक बहुत छोटा-सा अकेला इंसान। यह कहानी किसी बेटे को दोष देने की नहीं है। न ही बेटी को। न विदेश जाने को। न अच्छी नौकरी को। न बड़े पैकेज को। सवाल कहीं और है। हमने बच्चों को पढ़ाया। उन्हें उड़ना सिखाया। उन्हें कहा—“जहाँ तुम्हारा भविष्य अच्छा हो, वहाँ जाना।” और उन्होंने वही किया। तो फिर हमें उनसे शिकायत भी कैसी? लेकिन क्या हमने कभी अपने भविष्य के बारे में सोचा? बच्चे जब बाहर चले जाते हैं तो माता-पिता अक्सर कहते हैं—“कोई बात नहीं... बच्चे खुश हैं, यही बहुत है।” सही बात है। लेकिन रात को जब घर में सिर्फ घड़ी की टिक-टिक सुनाई देती है, तब क्या?

सुबह उठकर दो कप चाय बनाने की आदत हो और दूसरा कप पीने वाला कोई न हो, तब क्या? डॉक्टर कहे कि किसी को साथ लेकर आएँ और फोनबुक में दर्ज सैकड़ों नंबरों में से कोई ऐसा न मिले जो उसी शहर में रहता हो, तब क्या?

बाजार से सब्जी का थैला उठाते समय हाथ काँपने लगें और साथ चलने वाला कोई न हो, तब क्या? शायद इसलिए कि उन्हें पैसे चाहिए थे। शायद इसलिए कि कुछ घंटे घर से बाहर निकलेंगे। फिर यूनिवर्सिटी के बाहर जाने वाले छात्रों के दूर में भी जाने लगे।

बेटे की जिंदगी में शनिवार-रविवार भी उसकी अपनी जिंदगी के लिए हों... तब बूढ़े माता-पिता अपने रविवार का क्या करें? क्या वे खुश पार्क में जाकर कुछ घंटे बैठें? फिर घर लौटकर अपने कमरे में चुपचाप पड़े रहें? फिर शाम को उसी पार्क में जाकर कुछ परिचित चेहरों को देखें?

और धीरे-धीरे अपने जीवन को सिर्फ इस इंतजार में बदल दें कि—“आज शायद बेटे का फोन आ जाए।”

या फिर उन्हें उसी पुराने घर में वापस लौट जाना चाहिए, जहाँ उन्होंने पूरी जिंदगी बिताई? अपना काम खुद करना चाहिए? बाजार खुद जाना चाहिए? खाना खुद बनाना चाहिए? दवाइयाँ खुद खरीदनी चाहिए? और रात को बच्चों में चुपचाप पड़े रहें? फिर शाम को उसी पार्क में जाकर कुछ परिचित चेहरों को देखें?

शायद यही जीवन है। शायद यही आज की सच्चाई है। लेकिन जब अगली बार किसी मेडिकल स्टोर पर कोई पिता गर्व से कहे—“मेरे बेटे का पैकेज 70 लाख का है...” तो शायद उसके बाद एक सवाल मन में जरूर उठना चाहिए—“बहुत अच्छा... बेटे का पैकेज 70 लाख का है। लेकिन इस पैकेज में उसके बूढ़े माँ-बाप के लिए साल में कितने दिन हैं?” और अगर उस सवाल का जवाब हमारे पास नहीं है... तो एक और सवाल है। हम बच्चों को करोड़ों की नौकरी के लिए तैयार कर रहे हैं... लेकिन क्या हमने उन्हें यह सिखाया है कि उन करोड़ों की कमाई के बीच अपने बूढ़े माँ-बाप के लिए दो घंटे कैसे बचाए जाते हैं? और उससे भी बड़ा सवाल—

जिस दिन हमारे बच्चे सचमुच बहुत सफल हो जाएँगे, बहुत दूर चले जाएँगे और अपने पैरों पर खड़े हो जाएँगे... उस दिन हमारे पास गर्व करने के लिए तो बहुत कुछ होगा—लेकिन क्या हमारे पास उनके साथ बैठने के लिए कोई होगा?

■ डॉ. ब्रज श्रीवास्तव

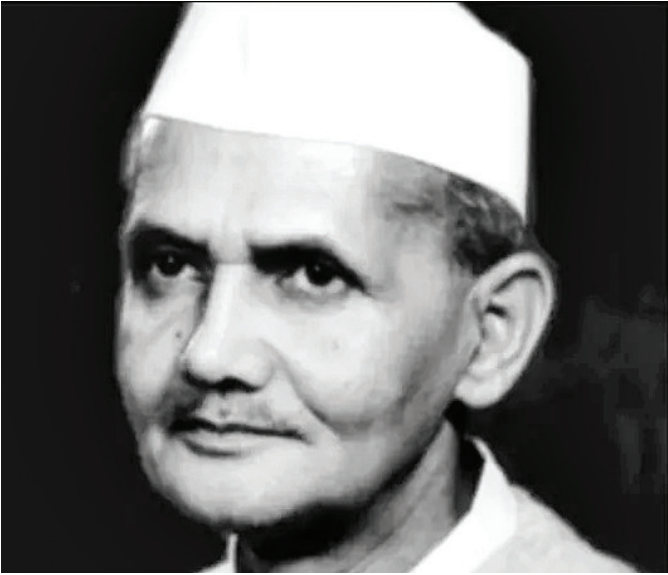
लाल बहादुर शास्त्री: सादगी, संकल्प और राष्ट्रसेवा की मिसाल

अनिल माथुर, वरिष्ठ पत्रकार

भारत के राजनीतिक इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं, जिनकी पहचान उनके पद से अधिक उनके चरित्र और कर्म से होती है। पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी ऐसे ही जननेता थे। उनका जीवन सादगी, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्र के प्रति समर्पण का उदाहरण है। वे ऐसे समय में देश के प्रधानमंत्री बने, जब भारत अनेक गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा था। सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने दृढ़ नेतृत्व, नैतिक साहस और जनविश्वास के बल पर देश को कठिन परिस्थितियों से आगे बढ़ाने का प्रयास किया।

लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय में हुआ था। उनके पिता शारदा प्रसाद श्रीवास्तव एक शिक्षक और बाद में राजस्व विभाग में कार्यरत थे। बचपन में ही पिता का निधन हो जाने के कारण परिवार को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। शास्त्रीजी का प्रारंभिक जीवन अभावों में बीता, लेकिन इन परिस्थितियों ने उनके व्यक्तित्व में आत्मनिर्भरता, अनुशासन और संघर्षशीलता के गुण विकसित किए।

शिक्षा के प्रति उनका लगाव बचपन से ही था। वे राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित हुए और महात्मा गांधी के विचारों ने



उनके जीवन की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने असहयोग आंदोलन में भाग लिया और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई बार जेल गए। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी ने उन्हें केवल राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं बनाया, बल्कि जनता की समस्याओं को निकट से समझने का अवसर भी दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शास्त्रीजी ने उत्तर प्रदेश की राजनीति और प्रशासन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाईं। बाद में

वे केंद्र सरकार में मंत्री बने। रेल मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल की एक घटना उनके सार्वजनिक जीवन की नैतिकता का उल्लेखनीय उदाहरण मानी जाती है। एक रेल दुर्घटना के बाद उन्होंने नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। उस समय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उनके इस्तीफे को स्वीकार किया। यह प्रसंग भारतीय लोकतांत्रिक परंपरा में मंत्री की जवाबदेही के उदाहरण के रूप में अक्सर उद्धृत किया जाता है।

पं जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद 9 जून 1964 को लाल बहादुर शास्त्री जी ने भारत के दूसरे प्रधानमंत्री के रूप में पदभार संभाला। यह उनके लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण समय था। देश आर्थिक कठिनाइयों, खाद्यान्न संकट और सुरक्षा संबंधी चुनौतियों से जूझ रहा था। प्रधानमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल भले ही अपेक्षाकृत छोटा रहा, लेकिन इस अवधि में उन्होंने भारतीय राजनीति और राष्ट्रीय जीवन पर गहरी छाप छोड़ी।

शास्त्रीजी के नेतृत्व की सबसे चर्चित विशेषताओं में उनकी सादगी और दृढ़ता शामिल थी। वे सत्ता को विशेषाधिकार के रूप में नहीं, बल्कि जिम्मेदारी के रूप में देखते थे। उनका सार्वजनिक जीवन यह संदेश देता है कि नेतृत्व की प्रभावशीलता केवल बड़े संसाधनों या लंबे कार्यकाल पर निर्भर नहीं करती; स्पष्ट उद्देश्य, नैतिक विश्वसनीयता और कठिन निर्णय लेने का साहस भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध ने उनके नेतृत्व की गंभीर परीक्षा ली। युद्ध के दौरान उन्होंने देश को एकजुट रखने और सशस्त्र बलों का मनोबल बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी दौर में उनका प्रसिद्ध नारा “जय जवान, जय किसान” राष्ट्रीय चेतना का हिस्सा बना। इस नारे में उन्होंने देश की सुरक्षा और खाद्य सुरक्षा—दोनों को समान महत्व

दिया। सैनिक सीमा की रक्षा करते हैं तो किसान देश के नागरिकों का पेट भरते हैं; शास्त्रीजी ने दोनों को राष्ट्र की शक्ति के आवश्यक आधार के रूप में रेखांकित किया। उनके प्रधानमंत्री कार्यकाल में कृषि उत्पादन बढ़ाने और खाद्यान्न संकट से निपटने पर विशेष ध्यान दिया गया। किसानों को प्रोत्साहन, कृषि उत्पादन में वृद्धि और खाद्य सुरक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाने की दिशा में अनेक प्रयास हुए। आगे चलकर भारत में हरित क्रांति के विस्तार के लिए जो परिस्थितियाँ बनीं, उनमें उस दौर की नीतिगत दिशा का भी योगदान रहा। इस संदर्भ में शास्त्रीजी के नेतृत्व को भारतीय कृषि नीति के इतिहास में महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देखा जाता है।

शास्त्रीजी का राष्ट्रवाद आक्रामकता पर नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता पर आधारित था। वे चाहते थे कि भारत अपनी आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर अत्यधिक निर्भर न रहे। खाद्यान्न संकट के दौरान उन्होंने स्वयं सादगी का उदाहरण प्रस्तुत किया और देशवासियों से संसाधनों की बचत तथा अनुशासन की अपील की। उनका आचरण उनके संदेश से अलग नहीं था—यही उनकी सार्वजनिक विश्वसनीयता की एक बड़ी वजह थी। उनके व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी था कि

वे अत्यंत विनम्र थे। प्रधानमंत्री बनने के बाद भी उनका जीवन अपेक्षाकृत सादा रहा। उनके बारे में अनेक प्रसंग उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी और सरलता को रेखांकित करते हैं। सार्वजनिक जीवन में आज जब पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक आचरण पर लगातार चर्चा होती है, तब शास्त्रीजी का जीवन इन मूल्यों के ऐतिहासिक उदाहरण के रूप में सामने आता है।

भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद सोवियत संघ की मध्यस्थता में भारत और पाकिस्तान के बीच जनवरी 1966 में ताशकंद समझौता हुआ। 10 जनवरी 1966 को समझौते पर हस्ताक्षर करने के कुछ ही समय बाद 11 जनवरी की रात ताशकंद में शास्त्रीजी का निधन हो गया। उनका असाधारण निधन पूरे देश के लिए गहरा आघात था। उन्हें मरणोपरान्त भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ‘भारत रत्न’ से सम्मानित किया गया। लाल बहादुर शास्त्री का जीवन हमें यह समझने का अवसर देता है कि लोकतंत्र में सार्वजनिक पद व्यक्ति को बड़ा नहीं बनाता, बल्कि व्यक्ति का आचरण उस पद की गरिमा को बढ़ाता है। उन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में बहुत कम समय बिताया, लेकिन उनके निर्णयों, सादगी और नैतिकता ने भारतीय सार्वजनिक जीवन में एक स्थायी छाप छोड़ी।

आज जब भारत खाद्य सुरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भरता और सुशासन जैसे विषयों पर आगे बढ़ रहा है, तब शास्त्रीजी का जीवन इतिहास के एक महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में सामने आता है। “जय जवान, जय किसान” केवल एक नारा नहीं था; यह उस सोच की अभिव्यक्ति थी जिसमें राष्ट्र की सुरक्षा और नागरिकों की आजीविका को एक-दूसरे से जुड़ा हुआ माना गया। शास्त्रीजी की विरासत का अर्थ केवल उनकी जयंती या पुण्यतिथि पर उन्हे याद करना नहीं है। उनकी वास्तविक विरासत ईमानदार सार्वजनिक जीवन, जिम्मेदारी स्वीकार करने की क्षमता, कठिन परिस्थितियों में संयम और राष्ट्रहित को प्राथमिकता देने की भावना में निहित है।

लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन छोटा था, लेकिन उसका प्रभाव व्यापक और दीर्घकालिक रहा। उन्होंने दिखाया कि सादगी कमजोरी नहीं, बल्कि नेतृत्व की शक्ति हो सकती है; विनम्रता पद की गरिमा को कम नहीं करती, बल्कि उसे बढ़ाती है; और राष्ट्रसेवा के लिए बड़े शब्दों से अधिक आवश्यक है—निष्ठा, अनुशासन और कर्म। यही कारण है कि भारतीय इतिहास में उनका नाम आज भी सम्मान और विश्वास के साथ लिया जाता है।



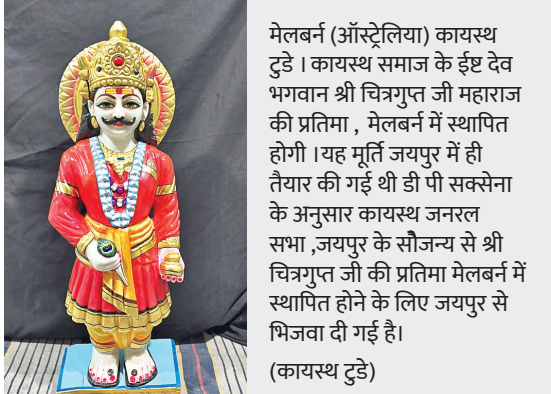
चित्रांश पारिवारिक बैठक में अहम निर्णय

पुणे (कायस्थ टुडे)। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा, मध्य भारत द्वारा आईएसबीटी स्थित हेंरिटेज क्राउन में मासिक चित्रांश पारिवारिक बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में चित्रांश परिवारों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए गीत-संगीत, मनोरंजन एवं सामाजिक सरोकारों से जुड़े विषयों पर विचार साझा किए। बैठक में आगामी नेपाल यात्रा, देवी आराधना एवं गखा कार्यक्रम की रूपरेखा पर चर्चा की गई। साथ ही प्राणायाम, मानसिक एकप्राता एवं मन को नियंत्रित रखने जैसे विषयों पर भी सार्थक संवाद हुआ।

प्रदेश अध्यक्ष सुनील श्रीवास्तव ने कहा कि ऐसे आयोजन समाज के परिवारों को जोड़ने के साथ नई पीढ़ी को संस्कारों एवं सामाजिक दायित्वों से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम है। कार्यक्रम के संयोजक दिवाकर श्रीवास्तव, सहसंयोजक राजकुमार श्रीवास्तव एवं दिनेश श्रीवास्तव सहित समाज के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन सामूहिक भोज एवं आत्मीय मिलन के साथ हुआ।



कोटा में आल इंडिया बी एस एन एल ऑल इंडिया बी एस एन एल डॉट पेनान्स एसोसिएशन के सेवानिवृत्त सदस्य शंकर लाल मेघवाल, वार्ड 29 से पार्षद पर विजय होने पर बी एस एन एल के सभी सदस्यों की ओर से जिला सचिव किशोर माथुर ने सम्मान किया गया। मेघवाल ने कांग्रेस टिकट पर चुनाव लड़ा था। (कायस्थ टुडे)



मेल्बर्न (ऑस्ट्रेलिया) कायस्थ टुडे। कायस्थ समाज के ईश्वर देव भगवान श्री चित्रगुप्त जी महाराज की प्रतिमा, मेल्बर्न में स्थापित होगी। यह मूर्ति जयपुर में ही तैयार की गई थी। पी पी सक्सेना के अनुसार कायस्थ जनरल सभा, जयपुर के सौजन्य से श्री चित्रगुप्त जी की प्रतिमा मेल्बर्न में स्थापित होने के लिए जयपुर से भिजवा दी गई है। (कायस्थ टुडे)

कायस्थ सभा, प्रताप नगर जयपुर की ओर से 25 अक्टूबर को 'द पिकसिटी हैरीटेज रेस्टोरेंट एंड कैफे, गोपीनाथ अस्पताल के पास, सेक्टर 8, प्रताप नगर, सांगानेर जयपुर' में गरबा महोत्सव आयोजित किया जायेगा। ये कार्यक्रम शाम 5.30 से रात 10 बजे तक होगा। अधिक जानकारी के लिए अवध बिहारी माथुर मो. नं. 9251626485 पर संपर्क कर सकते हैं। आयोजकों के अनुसार भव्य गरबा महोत्सव में “डांडिया रास - सुर, ताल और उत्सव का संगम” में मनमोहक गरबा और डांडिया रास, पारम्परिक परिधान, संगीत का विशेष आकर्षण रहेगा। यह सभी आयु वर्ग के लिए होगी। कायस्थ सभा ने चित्रांश परिवारों से पारम्परिक पारंपरिक वेशभूषा में सांस्कृतिक संस्था में शामिल होकर स्मरणीय एवं भव्य बनाने की अपील की है। (कायस्थ टुडे)

प्रो. संगीता श्रीवास्तव फिर बनीं इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की कुलपति

कायस्थ टुडे
इलाहाबाद। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इवि) की कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव को पांच वर्ष के दूसरे कार्यकाल के लिए पुनर्नियुक्त किया गया है। राष्ट्रपति एवं विश्वविद्यालय की विजिटर द्रौपदी मुर्मू ने उनकी पुनर्नियुक्ति को मंजूरी दी है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग की ओर से 22 सितंबर को इस संबंध में आदेश जारी किया गया। उनका

नया कार्यकाल 16 सितंबर से प्रभावी माना गया है। नियुक्ति पांच वर्ष अथवा 70 वर्ष की आयु पूरी होने तक, जो भी पहले हो, प्रभावी रहेगी।

प्रो. संगीता श्रीवास्तव इलाहाबाद विश्वविद्यालय की पहली महिला कुलपति हैं और अब वह विश्वविद्यालय की पहली ऐसी कुलपति भी बन गई हैं, जिन्हें लगातार दूसरे पांच वर्षीय कार्यकाल के लिए पुनर्नियुक्ति मिली है। विश्वविद्यालय



के नेतृत्व को लेकर पिछले कुछ समय से बनी अनिश्चितता भी इस निर्णय के साथ समाप्त हो गई है। विश्वविद्यालय

ग्लोबल कायस्थ कांफ्रेंस की वर्किंग कमेटी घोषित

कायस्थ टुडे
नई दिल्ली। के अध्यक्ष राजीव रंजन प्रसाद ने की ग्लोबल वर्किंग कमेटी की सूची जारी की है।

सूची के अनुसार श्रीमती रागिनी रंजन (पटना, बिहार), मैनेजिंग ट्रस्टी, आलोक कुमार सिन्हा (न्यू जर्सी, यूएसए) - उपाध्यक्ष कुमार शशिार सिन्हा (मुंबई महाराष्ट्र) उपाध्यक्ष, आलोक अखिलर (महाराष्ट्र) उपाध्यक्ष दीपक अभिषेक (पटना, बिहार) उपाध्यक्ष, श्रीमती निष्का रंजन (मुंबई महाराष्ट्र) सीएफओ, गौतम कुमार (दुबई, यूएई) सचिव, शुभांशु श्रीवास्तव (नोएडा, उत्तर प्रदेश) संगठन सचिव, मेजर जनरल अनुज माथुर (जयपुर, राजस्थान) वेटरेंस सेल-अध्यक्ष, अंजन श्रीवास्तव (मुंबई, महाराष्ट्र) - आर्ट एंड कल्चर सेल - अध्यक्ष, पवन सक्सेना (ग्वालियर, मध्यप्रदेश) महासचिव, अनीशा श्रीवास्तव (दिल्ली) लीगल एंड कॉर्पोरेट सेल - अध्यक्ष, नवीन कुमार (महाराष्ट्र) सीसीसीआई अध्यक्ष, भितेश कर्ण (यूएई) ग्लोबल कॉर्डिनेटर, सौरभ श्रीवास्तव (दिल्ली) - डिजिटल टेक्नोलॉजी महासचिव, डॉ राजय नारायण (लंदन, यूके) अध्यक्ष यूरोप, आलोक कुमार सिन्हा (न्यू जर्सी यूएसए) अध्यक्ष यूएसए, श्रीमती देविका माथुर (फ़्लोरिडा) - अध्यक्ष फ़्लोरिडा, यूएसए), भितेश कर्ण (दुबई यूएई) अध्यक्ष यूएई, डॉ पूनम कर्ण (काठमांडू, नेपाल) अध्यक्ष, नेपाल, अवधेश माथुर (ब्राज़ील) अध्यक्ष लैटिन अमेरिका, ज्योति कुमार माथुर अध्यक्ष ऑस्ट्रेलिया, डॉ आस्था माथुर अध्यक्ष जर्मनी, भितेश कुमार (टोरंटो, कनाडा) - अध्यक्ष कनाडा और अभिषेक श्रीवास्तव अध्यक्ष-चाना (अफ्रीका) होंगे।

गया बिहार में पितृ पक्ष में सेवा

कायस्थ टुडे
गया (बिहार)। डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद स्कॉलरशिप एवम वेलफेयर ट्रस्ट की ओर से विगत दो वर्षों की भांति इस वर्ष भी द्वारा विष्णुपद मंदिर के पास बैजनाथ बैठा के सामने पितृ पक्ष मे 10 अक्टूबर तक सुबह 8 से 10 तक और शाम में 4 बजे से 6 बजे तक चाय , नीम्बू पानी , शरबत , बिस्कुट तथा फल की सेवा दी जायेगी। ट्रस्ट ने चित्रांशजनों से शिविर मे आकर सेवा कर पुण्य के भागीदार बनने की अपील की है।

जस्टिस विनीत माथुर, रालसा के कार्यकारी अध्यक्ष और हाई कोर्ट के प्रशासनिक न्यायाधीश बने

कायस्थ टुडे
जोधपुर। राजस्थान उच्च न्यायालय के वरिष्ठ न्यायाधीश विनीत माथुर, राजस्थान राज्य विधिका संस्था प्राधिकरण (रालसा) के कार्यकारी अध्यक्ष बनाए गए हैं। हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने एक

अन्य आदेश जारी कर जस्टिस विनीत माथुर को हाई कोर्ट का प्रशासनिक न्यायाधीश नियुक्त किया है। 23 साल के कालांतर अनुभव को देखते हुए 16 नवम्बर 2016 को राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद पर लगाया गया था। जस्टिस

विनीत माथुर ने केन्द्र और राज्य सरकार की ओर से कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाई हैं। वर्ष 1985 से 2004 तक एडीशनल सेंट्रल गवर्नमेंट स्टेडिंग कौंसल तथा वर्ष 2004 से 2014 तक भारत सरकार के असिस्टेंट

सालिसिटर जनरल आफ इंडिया रहे। जस्टिस विनीत माथुर सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश:7 वें वेतन आयोग के अध्यक्ष ख्यातमान न्यायावैद अशोक माथुर के पुत्र हैं। न्यायमूर्ति अशोक माथुर मध्य प्रदेश और कलकत्ता उच्च



न्यायालय के मुख्य न्यायधीश भी रहे हैं।

युगल किशोर नेहवारिया का उदयपुर में स्वागत

कायस्थ टुडे
उदयपुर। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री युगल किशोर नेहवारिया के जयपुर से उदयपुर आगमन पर श्री चित्रगुप्त सेवा संस्थान के सेक्टर-7 स्थित संस्थापक सदस्य गोरी शंकर भटनागर के निवास पर आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय कायस्थ महासभा जिला शाखा के अध्यक्ष डॉ. मनोज भटनागर, जिला सचिव मनीष भटनागर, प्रदेश महासचिव विष्णु भटनागर, युवा मोर्चा से पंकज भटनागर सहित चित्रांश महासभा मेवाड़ के पदाधिकारी राकेश माथुर, रमेश भटनागर एवं समाजजन उपस्थित रहे। नेहवारिया ने समाजजनों से संवाद करते हुए कहा कि सामाजिक एकता, आपसी सहयोग और संगठनात्मक समन्वय ही समाज की प्रगति का आधार है। उन्होंने समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर व्यापक बनाने तथा युवाओं और नई पीढ़ी को संगठन से जोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा



कि व्यक्तिगत मतभेदों से ऊपर उठकर समाज हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए एकजुट होकर आगे बढ़ना समय की आवश्यकता है। इस दौरान उपस्थित समाजजनों ने प्रदेश अध्यक्ष नेहवारिया के मार्गदर्शन में सामाजिक एकता एवं संगठनात्मक मजबूती के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया। श्रीमती आरती भटनागर एवं अंजलि भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री चित्रगुप्त सेवा संस्थान की ओर से गोरी शंकर भटनागर और अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के प्रदेश सचिव विष्णु प्रसाद भटनागर ने नेहवारिया को शाल, व दूधड़ा व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। युगल किशोर नेहवारिया का उदयपुर कार्यालय आने पर स्वागत किया।

डॉ. अरविन्द माथुर की फिल्म को अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार

जयपुर, (कायस्थ टुडे)। “केयरगिवर आशा सोसाइटी” जोधपुर - लोकप्रिय-दूरदर्शी डॉक्टर अरविन्द माथुर द्वारा निर्मित लघु फिल्म “क वि ता क्ला से ज” को “मिलान अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल” इटली में, सर्वश्रेष्ठ ड्रामा फिल्म का पुरस्कार मिला है। हजारों प्रविष्टियों में से, भारत की इस लघु फिल्म को, प्रथम पुरस्कार के लिए चुना जाना, हमारे देश लिए अत्यंत गर्व की बात है। फिल्म की संकल्पना-अवधारणा डॉ. अरविन्द माथुर की है। कहानी-डायलॉग लेखक-एकीकृतित्व प्रोड्यूसर-एडोसिएट डायरेक्टर, जोधपुर के ही शोभित माथुर पुत्र/ शरदेश माथुर हैं। फिल्म के डायरेक्टर गोपाल चौधरी (प.बंगाल) हैं। फिल्म के मुख्य कलाकार —सुदिता सिंह, अनुराधा आठवानी, राजदीप वर्मा, आर्यन माथुर, दीक्षा मिश्रा, निर्दोष माथुर एवं डॉ.मीना बर्डिया हैं।

